CHAPTER 50

SANSKRIT

Doctoral Theses

558. गौड़ (मीतू)

फलित ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से नाभस योगों का परिशीलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

Th 18114

सारांश

अन्धकार में इष्ट पदार्थ का ज्ञान जिस प्रकार दीपक की सहायता से होता है, मानव जीवन के समस्त शुभाशुभ का ज्ञान उसी प्रकार ज्योतिषशास्त्र के द्वारा होता है। फलित ज्योतिषशास्त्र के अन्तगर्त विवेचित नाभस योगों का परिशीलनात्मक अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि नाभस योग एक समय एवं एक स्थान विशेष पर तत्कालीन उदय राशि (लग्न) के सन्दर्भ में खगोल में गोचरस्थ सप्त ग्रहों - सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि की भचक्र की मेषदि द्वादश राशियों से विभुषित द्वादश भागों (कुण्डली के सन्दर्भ से तन्वादि द्वादश भावों) में समग्रीय उपस्थिति का प्रतिदर्पण हैं। ये दशाष्टवर्गादि के फलों को निष्फल नहीं करते अपितु उनसे तारतम्य रखते हुए अपने फल प्रदान करते है ।

विषय सूची

1.फलित ज्योतिषशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन। 2. फलित ज्योतिषशास्त्र में योग-विचार। 3. फलित ज्योतिषशास्त्र में नाभस योग। 4. नाभस योगों का प्रथम उपवर्ग - आश्रम योग । 5. नाभस योगों का द्वितिय उपवर्ग-दल योग। 6. नाभस योगों का तृतीय उपवर्ग-संख्या योग। 7. नाभस योगों का चतुर्थ उपवर्ग-आकृति योग। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

559. डांगे (पूजा)

सांख्यकारिका की प्रमुख संस्कृत टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. रमेश कुमार शर्मा

Th 18113

सारांश

भारतीय-दार्शनिक-परम्परा में महर्षि कपिल प्रणीत सांख्य दर्शन का स्थान अतीव महत्त्वपूर्ण तथा गौरव-मण्डित रहा है। सांख्य परम्परा में अनेक आचर्य हुए है परन्तु वर्तमान समय में कई आचार्यों के नाम विलुप्त हो गये है। सांख्यकारिका में केवल कपिल, आसुरि, पंचाधिकरण, पंचशिख, पतंजलि आदि कई सांख्याचार्यों के नाम व कतिपय आचार्यों के सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है। सांख्य विचारधारा उपनिषद्, महाभारत, पुराण आदि में उपलब्ध होती है जिससे इसके विशाल साहित्य का अनुमान किया जा सकता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन ग्रन्थ सांख्यसूत्र, सांख्यकारिका व तत्त्वसमाससूत्र उपलब्ध होते है। ईश्वरकृष्ण द्वारा विरचित 'सांख्यकारिका' सांख्य का सर्वप्रथम उपलब्ध व प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। ईश्वरकृष्ण नं सांख्य के सभी सिद्धांतों को 72 कारिकाओं में प्रस्तुत कर 'गागर में सागर' भरने जैसा सफल व स्तुत्य प्रयास किया है। सांख्यकारिका पर अनेक टीकाएँ उपलब्ध होती है । इन टीकाओं में माठरवृत्ति, युक्तिदीपिका, गौडपादभाष्य, जयमंगला तथा सांख्यतत्त्वकौमुदी प्राचीन तथा प्रमुख टीकाएँ हैं, जिनका तुलनात्मक अध्ययन ही हमारे शोध का विषय है।

विषय सूची

1. सांख्य दर्शन : एक संक्षिप्त परिचय। 2. सांख्यकारिका व तत्परक टीकाएँ। 3. सांख्य की मूलभूत तत्त्वमीमांसा (विशेषतः टीकाओं के सन्दर्भ में)। 4. सांख्य टीकाओं में सर्ग-प्रक्रिया सम्बन्धी अवधारणा। 5. टीकाओं में त्रिविध प्रमाण मीमांसा। 6. कार्यकारणवाद की परिकल्पना (विशेषतः टीकाओं के सन्दर्भ में) । 7. अपवर्ग : दुःख व दुःख-निवृत्ति (टीकाओं के परिप्रेक्ष्य में)। 8. टीकाओं में ईश्वर तत्त्व का विश्लेषण। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

560. परवीन बाला

छत्तीसगढ़ के संस्कृत अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन।

निर्देशिका : एसो. प्रो. डॉ. सन्तोष गुप्ता

Th 18112

सारांश

भारतीय संघ के 26वें राज्य के रूप में 1 नवम्बर 2000 को मध्यप्रदेश राज्य से पृथक् एवं स्वतंत्र भौगोलिक इकाई के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य का अभ्युदय हुआ। छत्तीसगढ़ राज्य मात्र एक भौगोलिक इकाई ही नहीं है, अपितु एक विचारधारा, एक जीवन शैली, एक चिन्तन परम्परा, एक उदात्त भावना की विराट अनुभूति भी है। यह भारत की उत्तर एवं दक्षिण की संस्कृतियों का मंजुल संगम है। द्वितिय शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर 18वीं शताब्दी तक की कालावधि के चौदह राजवंशों तथा सामंतों के लगभग 163 अभिलेखों के प्राप्ति स्थान तथा उसमें वर्णित विषयों का विवेचन किया गया है। विषय विवेचन और वर्गीकरण से ज्ञात होता है कि राजाओं द्वारा इन अभिलेखों को लिखवाने के लिए प्रमुख रूप से काष्ठ, ताम्रपत्र, गुहालेख, स्तम्भलेख, प्रस्तर शिलालेख तथा राजमुद्राओं आदि का उपयोग किया गया था। उक्त लेखों में प्रारम्भिक लेखों की भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है, जबकि मध्यकालीन एवं आधुनिक लेखों की भाषा संस्कृत था लिपि नागरी तथा उत्तरकालीन नागरी है। छत्तीसगढ़ से कुछ तेलगू भाषी लेख भी मिले हैं, शोध परिधि के बाहर होने के कारण उनका विवेचन नहीं किया गया है।

विषय सूची

1. छत्तीसगढ़ राज्य की ऐंतिहासिक पृष्ठभूमि। 2. ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक के अभिलेखों की विषयसूची एवं प्राप्ति-स्थान। 3. छत्तीसगढ़ के प्रमुख राजवंश तथा उनकी प्रशासनिक ईकाइयाँ एवं पदाधिकारी। 4. सामाजिक एवं अर्थिक व्यवस्था। 5. धार्मिक एवं दार्शनिक व्यवस्था। 6. कला एवं साहित्य। 7. निष्कर्ष। संदर्भ ग्रंथ सूची।

561. शर्मा (संजय)

भारतीय दर्शन में भक्ति परम्परा : शैव, स्कान्द और गाणपत्य सम्प्रदाय के विशेष सन्दर्भ में।

निर्देशिका : प्रो. शकुन्तला पुंजानी

Th 18235

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में भारतीय दार्शनिक परम्परा के अन्तगर्त आने वाले विभिन्न दर्शनों का भूमिका स्वरूप में वर्णन किया गया है। जिनमें वेदाप्रामाण्यवादी तीन दर्शनों तथा वेदप्रामाण्यवादी षड्दर्शनों का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। इसमें भक्ति-परम्परा के उद्भव और विकास को दर्शाते हुए विभिन्न ग्रंथों में प्रतिपादित भक्ति के स्वरूप एवं उसके भेदों का वर्णन किया गया है तथा आस्तिक दर्शनों के अन्तगर्त आने वाले अद्वैतवादी शंकरमत, विशिष्टाद्वैतवादी रामानुजमत, द्वैताद्वैतवादी निम्बार्कमत, द्वैतवादी मध्वमत, शुद्धाद्वैतवादी वल्लभाचार्य मत और अचिन्त्य-भेदाभेदवादी चैतन्यमत में प्रतिपादित भक्ति का वर्णन करते हुए दर्शन और भक्ति में समन्वय स्थापित किया गया है। भक्ति-परम्परा के अन्तगर्त शैव-सम्प्रदाय का वर्णन किया गया है। इसमें वैदिक साहित्य, महाकाव्यों, पुराणों, संस्कृत साहित्य तथा अभिलेखों में शिव का वर्णन है। शिव के उपासकों द्वारा पूजित प्रतिमाओं में, शैव सम्प्रदाय के अनेक उपसम्प्रदायों, यथा - शैव-सिद्धान्त, काश्मीर शैव मत, पाशुपत मत, वीरशैव या लिंगायत मत और कपालिक मत में तथा विदेशों में शिव के स्वरूप का दिग्दर्शन है। इसमें भगवान् स्कन्द-कार्त्तिकेय की प्राचीन पूजा परम्परा को दर्शाया गया है । जिसमें वैदिक साहित्य, महाकाव्यों, पुराणों तथा संस्कृत साहित्य में स्कन्द का वर्णन किया गया है तथा उनकी उपासना में प्रयुक्त प्रतिमाओं का भी वर्णन है। इसमें वैदिक साहित्य, पुराणों, महाकाव्यों, संस्कृत साहित्य तथा अभिलेखों में गणपति के उल्लेख का वर्णन है। उनके प्रतिमाविज्ञान, सम्प्रदायों तथा विदेशों में गणपति पूजा का भी उल्लेख किया गया है। शैव-सम्प्रदाय के विभिन्न उपसम्प्रदायों, स्कन्द सम्प्रदाय तथा गाणपत्य सम्प्रदायों के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है।

विषय सूची

1. भारतीय दर्शन के स्कन्ध। 2. आस्तिक दर्शनों में भक्ति। 3. भक्ति परम्परा में

शैव-सम्प्रदाय। 4. भक्ति परम्परा में स्कान्द-सम्प्रदाय। 5. भक्ति परम्परा में गाणपत्य-सम्प्रदाय। 6. भारतीय दर्शन में भक्ति सम्प्रदाय का योगदान। उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

562. शशी बाला

भर्तृहरि की जाति सम्बन्धी अवधारणा का बौद्ध आचार्यों के परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह

Th 18115

सारांश

इस शोध-प्रंबध के विविध अध्यायों में भारतीय दर्शन एवं व्याकरण दर्शन के ऐतिहासिक एवं वैचारिक दोनां पक्षों के अध्ययन का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में संकलित भारतीय दर्शन की विविध मान्यताओं का आकलन करते हुए निष्कर्ष का प्रतिपादन किया गया है। व्याकरणों में अग्रगण्य भर्तृहरि को प्रमाणभूत आचार्य के रूप में स्वीकार करते हुए उनकी जाति की अवधारणा विचार करके यह बताया गया है कि भर्तृहरि ने जाति को सत्तारूप और महासत्ता सिद्ध करते हुए उसे परब्रह्म कहा है। इस शोध प्रबन्ध के सार रूप में कहा जा सकता है कि बौद्ध आचार्यों ने क्षणिकवाद और अनात्मवाद सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि में 'अपोह' नामक सिद्धान्त को आधार बनाकर जाति की आवश्यकता का निराकरण किया है। परन्तु यह अपोह अतद्व्यावृत्ति रूप निषेधात्मक होने से किसी वस्तु का निषेध करने में तो समर्थ हो सकता है। परन्तु अपेक्षित वस्तु के सकारात्मक प्रतिपादन में नहीं। उक्त कथन नैयायिकों का है। इस आक्षेप का निराकरण परवर्ती बौद्ध आचार्यों ने अपोह को अतद्व्यावृत्ति रूप निषेधात्मक के साथ-साथ निध्यात्मक स्वरूप को भी स्वीकार किया है।

विषय सूची

1.भारतीय दर्शन में जाति। 2. भर्तृहरि-प्रोक्त ''जाति की अवधारणा''। 3. बौद्ध दर्शन परम्परा में जाति। 4. बौद्ध सम्मत 'अपोह' : शब्द, अर्थ एवं स्वरूप। 5. वैयाकरणों की शब्दार्थजाति विषयक अवधारणा के निराकरण हेतु उपस्थापित बौद्धाचार्य की युक्ति एवं तर्कों का विश्लेषण तथा परिशीलन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

563. सत्य व्रत

द्वैत वेदान्त सम्मत तर्कशास्त्र : एक समीक्षा।

निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

Th 18260

सारांश

द्वैत वेदान्त के प्रतिष्ठापक आचार्य मध्व है। इनको 'पूर्णप्रज्ञ' 'आनन्दतीर्थ', 'पूर्णबोध' के नाम से भी जाना जाता है। इनका आविर्भाव 13वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में माना जाता है। इन्होंने अपने मेधा एवं विलक्षण प्रतिमा के बल पर प्रस्थानत्रयी-उननिषद्, गीता एवं ब्रह्मसूत्र पर अत्यन्त विद्वतापूर्ण, गम्भीर तथा प्रामाणिक भाष्यों की रचना की। द्वैतवेदान्त सम्मत तर्कचिन्तन (तर्कशास्त्र) भारतीय दर्शन की चिन्तन पद्धति को पूर्व की अपेक्षा और सहज और सरल बना दिया। इसके फलस्वरूप सम्पूर्ण समाज रहस्यात्मक जीवन में उलझी गुत्थियों को सुलझाने में सफल हो सका। प्रस्तुत शोध इसी द्वैत सम्मत तर्कशास्त्र की चरणवार तुलनात्मक समीक्षा के साथ प्रस्तुति का एक प्रयास है।

विषय सूची

1. भूमिका। 2. तर्कशास्त्र के मौलिक घटक-प्रमा और प्रमाण। 3.तर्क का स्वरूप और उसके भेद। 4. प्रत्यक्ष प्रमाण और उसके भेद। 5. अनुमान प्रमाण और उसके भेद। 6. शब्द प्रमाण । 7. भारतीय दार्शनिक चिन्तन में द्वैत वेदान्त सम्मत तर्कशास्त्र की समीक्षा। 8. द्वैतवेदान्त का भारतीय तर्कशास्त्र का योगदान। संदर्भ ग्रंथ सूची।

564. सरीन (नन्दिनी)

बिहार से प्राप्त संस्कृत अभिलेखों में प्रतिबिम्बित समाज एवं धर्म।

निर्देशिका : डॉ. सन्तोष गुप्ता

Th 18110

सारांश

बिहरी से प्राप्त अभिलेख जहाँ एक ओर विभिन्न राजवंशों की वंशावलियों की जानकारी देते हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक स्थिति तथा धार्मिक

भावनाओं का ज्ञान भी कराते है। समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था प्रचलित थी। वर्ण के अनुसार ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ जाति थी। अशोक के अभिलेखों में ब्राह्मणों को आदर, का उल्लेख मिलता है तथा गुप्त व पाल वंशीय अभिलेखों में भी ब्राह्मणों को दान दिए जाने के उल्लेख मिलते है। तत्पश्चात् क्षत्रिय व वैश्यों का स्थान था। क्षत्रिए वर्ग देश की रक्षा तथा शासन करता था । वैश्य का कार्य व्यापार करना था । अभिलेखों में वर्णित सबसे निम्न जाति शूद्रों की थी, जिनका कार्य पहले वर्णित तीनों वर्णों की सेवा करना था। बिहार कई धार्मिक महान लोगों की जन्म स्थली रही है, जैसे जैन संप्रदान के 24वें तीर्थकर यहीं पैदा हुए, भगवान बुद्ध को ज्ञान बोध गया में ही हुआ तथा सिक्ख सम्प्रदाय के गुरू गोविन्द सिंह का जन्म भी यहीं हुआ। विदेशाी आक्रमणकारियों के बाद इस्लाम तथा ईसाई धर्म को भी फलने फूलने का स्थान बिहार में मिला।

विषय सूची

1.''बिहार'' - एक ऐतिहासिक परिचय। 2.बिहार से प्राप्त संस्कृत अभिलेखों की सूची तथा महत्त्वपूर्ण अभिलेखों का मूल पाठ। 3. बिहार में उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर सामाजिक परिदृश्य। 4. बिहार से प्राप्त अभिलेखों के आधार पर आर्थिक अवस्था का परिचय। 5. बिहार के अभिलेखों में निर्दिष्ट प्रशासनिक व्यवस्था। 6. बिहार के अभिलेखों में प्रतिबिम्बित धर्म। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

565. हरविन्दर कौर

भरतबाहुबलिमहाकाव्यम् का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

Th 18111

सारांश

पुण्यकुशलगणि कृत 'भरतबाहुबलिमहाकाव्य' की जैन साहित्यिक रचनाओं में विशेष उपलब्धि रही है। शोधकर्त्री ने प्रस्तुत ग्रंथ के साहित्यशास्त्रीय गुणों को प्रकाश में लाकर पाठकों का ध्यान इस रचना के प्रति आकर्षित करने का प्रयास किया है। 'साहित्य-शास्त्रीय अध्ययन' की दृष्टि से प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में कवि परिचय, जैन महाकाव्य का उद्‌भव एवं विकास, वस्तुगत वैशिष्ट्य, चरित्र-चित्रण, प्रकृति-चित्रण के साथ-साथ भाषा-शैली, गुण व रीति, अलंकार विधान (शब्दालंकार व अर्थालंकार), छन्द योजना, रसाभिव्यक्ति, ध्वनि निरूपण तथा अन्य विशेषताओं (पुरूषार्थ-चतुष्टय,

कथानक संधियों) को सम्मिलित किया गया है । भरतबाहुबलिमहाकाव्य में भरत एवं बाहुबलि के युद्ध का प्रसंग वर्णित है। ये दोनों जैनियों के प्रथम तीर्थलंकार भगवान् ऋषभदेव के पुत्र थे। इनपर आधारित अनेक कथाएँ जैनधर्म के दोनों सम्प्रदायों में उपलब्ध होती हैं जिनमें से भरत-बाहुबलि युद्ध का वर्णन जैनों के प्राचीन इतिहास में बहुचर्चित विषय रहा है। भरतबाहुबलिमहाकाव्य की कथावस्तु यद्यपि बहुत छोटी है परन्तु फिर भी कवि ने शास्त्रीय गुणों के प्रयोग से इसके कथानक को अत्यधिक सरस एवं हृदयस्पर्शी बना दिया है।

विषय सूची

1. पुण्यकुशलगणि का जीवनवृत्त, काल-निर्धारण, कृतियाँ। 2. जैन संस्कृत महाकाव्यों का उद्‌भव एवं विकास। 3. भरतबाहुबलि महाकाव्य का वस्तुगत वैशिष्ट्य। 4. भरतबाहुबलिमहाकाव्य के पात्रों का चरित्र-चित्रण। 5. भरतबाहुबलिमहाकाव्य का प्रकृति-चित्रण। 6. भरतबाहुबलिमहाकाव्य में साहित्यशास्त्रीय तत्त्व। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

566. हेमलता

पण्डिता क्षमाराव की कृतियों का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मूलयांकन।

निर्देशिका : प्रो. शकुन्तला पुंजानी

Th 18259

सारांश

प्रस्तुत प्रबंध के माध्यम से क्षमाराव के साहित्य में वर्तमान समय में मानव को क्या-क्या उपदेश प्राप्त हो सकते हैं, यह दर्शाने का प्रयत्न किया गया है। पण्डिता क्षमाराव आधुनिक संस्कृत साहित्य युग की स्वतन्त्रता आन्दोलन की कवयित्री है, जिन्होंने अपने स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लेने की अगाध उत्कण्ठा को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कवयित्री का अपने साहित्य के माध्यम से सत्य की राह पर चलने के लिए प्रेरित करने वाला यह सन्देश तत्कालीन ही नहीं वरन् आज के समाज तथा राष्ट्र और भविष्य के राष्ट्र तथा समाज को उपदेश प्रदान करने वाला है।

1. पण्डिता क्षमाराव का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व। 2. पण्डिता क्षमाराव का संस्कृत साहित्य में योगदान। 3. पण्डिता क्षमाराव की कृतियों में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के तत्व। 4. पण्डिता क्षमाराव का भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान। 5. पण्डिता क्षमाराव की कृतियों में काव्य-सौंदर्य । 6. पण्डिता क्षमाराव की कृतियों का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

M.Phil Dissertations

567. जेसवाल (दिलिप कुमार)
योगदर्शन में कर्माशय की अवधारणा : योगसूत्र व्यास भाष्य तथा वाचस्पति मिश्र, विज्ञानभिक्षु की टीकाओ एवं भोजवृति के आलोक में।
निर्देशिका : प्रो. शकुन्तला पुन्जानी

568. झा (अवदेश कुमार)
कर्मकर्त्ता सम्बन्धी भाषिक अवधारणा पाणिनी व्याकरण सम्प्रदाय के सन्दर्भ में।
निर्देशक : डॉ. ओम नाथ बिमाली

569. झा (चंदर कुमार)
न्याय वैशेषिक में व्याप्ति तत्व : सिद्धांत एवं प्रयोग।
निर्देशक : डॉ. सत्यामूर्ती

570. झा (दिव्या नन्द)
पाणिनीय - व्याकरण में नगर्थ विचार।
निर्देशक : प्रो. मिथिलेश चतुर्वेदी

571. परमवीर
परिभाषाओं के सन्दर्भ में कैयट एवं नागेश का मतभेद।
निर्देशक : प्रो. मिथिलेश चतुर्वेदी

572. प्रीती
न्यायदर्शन के अन्तगर्त वाद, जल्प एवं वितण्डा : एक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. सत्यमूर्ती

573. मीणा (महीप कुमार)
मधुसूदन सरस्वती सम्मत भक्ति सिद्धान्त।
निर्देशक : डॉ. रंजीत मिश्रा

574. मुकेश कुमार
अश्वघोष विरचित सौन्दरनन्द महाकाव्य में तिडन्तो का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. संध्या राठौर

575. रमिन्दर कौर
वाक्यपदीय की प्रथम कारिका की दार्शनिक समीक्षा।
निर्देशिका : डॉ. आभा माथुर

576. राय (वीर संतन पूरनेंदू)
नाट्यशास्त्रीय रंगमंच विधान आधुनिक परिप्रेक्ष्य में।
निर्देशक : डॉ. पंकज मिश्रा

577. राहुल सिंह
सागरनन्दी सम्मत रूपक एवं उपरूपक के सेदोपभेद : सिद्धान्त एवं प्रयोग।
निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

578. समराट
प्रक्रियाकौमुदी के कृत्य एवं कृदन्त तथा लघु-सिद्धान्तकौमुदी के कृदन्त प्रकरण का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह

579. सुदीपा रानी
अविधा और उसकी निवृत्ति के उपाय : साख्य-योग के विशेष संदर्भ में।
निर्देशिका : डॉ. रमा जैन